जनजातीय समुदायों के शिक्षा, स्वास्थ्य और रहन-सहन के बदलाव में सामुदायिक रेडियो का योगदान

मध्यप्रदेश के नालछा केंद्रित भील जनजाति के विशेष संदर्भ में

▫ डॉ. राखी तिवारी

▫▫ सौरभ कुमार मिश्र

सारांश :- भारत के समस्त राज्यों में भांति-भांति के जनजाति समूह निवास करते हैं। इनमें से कुछ तो बेहद ही प्रमुख हैं तो कुछ जनजातियां विलुप्त स्थिति में हैं। इन्हीं में से दो प्रमुख जानजातियां हैं भील और बैगा। मध्यप्रदेश में पाई जाने वाले यह दोनों जनजाति सरकार की ओर से संरक्षण प्राप्त हैं। लेकिन इतना समय बीत जाने के बाद भी इन जनजातियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ा नहीं जा सका। 98 प्रतिशत आकाशवाणी की पहुंच होने के बाद भी वे आज भी संचार माध्यमों से दूर हैं। इन्हीं समसयाओं को ध्यान में मध्यप्रदेश में दुनिया का पहला जनजाति समूहों के लिए उन्हीं की बोली में उन्हीं के द्वारा संचालित होने वाला सामुदायिक रेडियो का संचालन शुरू किया गया। चार साल से संचालित होने वाले इस रेडियो से जनजाति समूहों के बीच काफी जागरूकता आई है और रहन-सहन में भी बदलाव देखने को मिल रहा है। साथ ही सामुदायिक रेडियो के माध्यम से जनजाति समूहों की संस्कृतियों का भी संरक्षण हो रहा है।

महत्वपूर्ण शब्द :- जनजाति समूह, भील और बैगा जनजाति, सामुदायिक रेडियो।

प्रस्तावना

किसी भी देश के बारे में जानने के लिए वहां की संस्कृति को बेहतर तरीके से जानना बेहद जरूरी है और संस्कृति का प्रतीक है वहां की प्रचीन ऐतिहासिक इमारतें, कला-साहित्य संग्रह और सभ्यता के कालक्रम में वहां के वनों में रहने वाले जनजातीय समूह और उनके आचार- व्यवहार। इन सभी में उन्नत संस्कृति का एक सटीक और जीवंत उदाहरण जनजातीय समूहों में देखने को मिलता है। आज देश के हर राज्य में कहीं ना कहीं जनजाति समूहों का वास है। ये भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा भी हैं। कही अधिक संख्या में हैं तो कही लुप्तप्राय अवस्था में है। लेकिन जहां भी हैं मजबूती के साथ अपनी संस्कृति, धरोहरों और सभ्यताओं को संरक्षित किए हुए हैं। सरकार भी 90 के दशक से इन समूहों और इनकी सभ्यता को संरक्षित करने का कार्य करती आ रही हैं। लेकिन व्यवस्थित प्रबंधन ना हो पाने के कारण जनजातीय समूहों का विकास तेजी के साथ नहीं हो पा रहा हैं और वो आज भी समाज के मुख्यधारा से कटे हुए हैं। इन्ही सब समस्याओं को ध्यान में रखते हुए देश में सामुदायिक रेडियो का प्रादुर्भाव हुआ। सामुदायिक रेडियो का विकास सबसे पहले 2004 में कॉलेज कैंपस के रूप में हुआ। ये किसी विशेष समूह के लिए, समूह द्वारा और समूह के लिए तैयार किया गया विचार है। जिसका उद्देश्य जनजातीय इतिहास, संस्कृति और सभ्यता के संरक्षण के साथ उन्हें मुख्यधारा से जोड़ना है। सामुदायिक रेडियो किसी छोटे विशेष समूहों द्वारा संचालित कम लागत वाला रेडियो स्टेशन हैं। जो समुदायों के हितों और विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रसारण पर ध्यान केंद्रित करता है।

ऐसे रेडियो केंद्र के द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, मनोरंजन, आर्थिक और संस्कृति संरक्षण संबंधी कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। सही मायने में सामुदायिक रेडियो आज के दौर में बेजुबानों की आवाज बना हुआ है। वैसे तो सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की स्थापना देश भर के वनवासी समुदायों में की गई है। लेकिन इन सभी में मध्यप्रदेश देश का ऐसा राज्य है जहां पर कई प्रकार की जनजातियां निवास करती हैं। साथ ही कुछ ऐसी भी जनजातियां पाई जाती है, जो विश्व प्रसिद्ध हैं। जिनमें बैगा, भील, भीलाला और अंगरिया जनजातियां प्रमुख हैं। मध्य प्रदेश देश का इकलौता राज्य है, जहां पर अधिकतर जनजातीय समूहों के लिए उन्हीं की भाषा में, उन्हीं के द्वारा रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं। यहां पर वर्तमान समय में आठ सामुदायिक रेडियो का प्रसारण हो रहा है। सामुदायिक रेडियो अब धीरे-धीरे एक नए जमाने के मीडिया का रूप लेता जा रहा है। अब इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुचांने

▫ विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि, भोपाल, ई-मेल- rakhihariom@rediffmail.com

▫▫ शोधार्थी, मीडिया अध्ययन, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि, भोपाल, ई-मेल- saurabh.sip@gmail.com

की जरूरत है।

सामुदायिक रेडियो को सरोकार का रेडियो कहा जाता है। ये एकमात्र ऐसा माध्यम है, जो अभी भी समाचार, ब्रेकिंग और सनसनी खबरों से दूर है। एएमआरसी वर्ल्ड यानी एसोसिएशन ऑफ कम्युनिटी रेडियो ब्रॉडकॉसटर्स के अनुसार सामुदायिक रेडियो का ऐतिहासिक दर्शन यही है कि इसका प्रयोग बेजुबानों की आवाज के लिए हो। देशभर में पिछले दिनों सामुदायिक रेडियो को लेकर छपे शोधपत्र यही इशारा करते हैं कि वर्तमान समय में सामुदायिक रेडियो का कार्य रिमोट इलाकों में जागरुकता फैलाना है और जनजाति समुदायों को अपने पैरों पर खडा करने के लिए सहायता करना है। कम्युनिटी रेडियो का प्रारंभ समाज में एक खास वंचित तबके को ध्यान में रखकर बेहकया गया। सामुदायिक रेडियो अब अपनी बेहतर स्थिति में आ चुका है। अब इसकी पहुंच को अधिक से अधिक दूरी तक करना अगल लक्ष्य होना चाहिए। आज देश में सैकडों सामुदायिक रेडियों सटेशन हैं जो तमात जनातियों की आवाज बन रहे हैं।

शोध का उद्देश्य प्रतिशत

- सामुदायिक रेडियो की पहुंच का आंकलन करना।
- रेडियो के प्रति भील जनजाति की रुचि को जानना।
- भील जनजाति के शिक्षा, स्वास्थ्य और रहन-सहन में आए बदलाव में सामुदायिक रेडियो का योगदान।

शोध का अध्ययन क्षेत्र और भू-सामाजिक स्थितिः मध्यप्रदेश के भील के लिए स्थापित सामुदायिक रेडियो केंद्र नालछाः

धार जिला कार्यालय से करीब 40 किलोमीटर दूर पहाड़ों और सघन वन क्षेत्र में स्थित नालछा विकास खंड, जिसकी आबादी करीब 70 हजार है। नालछा से करीब 10 किलोमीटर की दूरी पर विश्व धरोहर मांडु स्थित है। जिसके कारण इसके आस-पास के इलाके और सड़क मार्ग विकसित हैं। यहां पर स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक विद्यालय, निर्वाचन कार्यालय के साथ कई सरकारी विभागों के केंद्र भी हैं। नालछा सामुदायिक रेडियो केंद्र 4 हजार वर्गमीटर में स्थापित प्राथमिक विद्यालय के दो कमरों में 90.4 मेगाहर्ट्ज की फ्रिक्वेंसी पर 10 घंटे का प्रसारण करता है। इसका संचालन गांव भील जनजाति समूहों के कुछ शिक्षित युवकों के द्वारा किया जा रहा है। साथ ही इसके देखरेख की जिम्मेदारी वन्या के पास है। सामुदायिक रेडियो का प्रसारण आस-पास के क्षेत्रों में करीब 10 से 12 किलोमीटर तक कुछ इलाकों में स्पष्ट और कुछ जगहों पर आंशिक तौर पर सुनाई देता है।

नालछा गांव और सामुदायिक रेडियो के प्रसारण के अनुसार भौगोलिक स्थिति

नालछा विकास खंड के अंतर्गत आने वाले गांव चारों तरफ से सघन वन क्षेत्रों और पहाड़ों से घिरे हुए हैं। नालछा से मांडु की ओर पूर्व दिशा में जाने वाली रोड पक्की है। जबकि अन्य गांव पूरी तरह से सड़कों से नहीं जुड़े हुए हैं। नालछा विकास खंड के अंतर्गत अवल्या और चैनाल दो गांव आते हैं। जो नालछा रेडियो केंद्र से उत्तर दिशा में बसे हैं। जहां पर रेडियो का प्रसारण स्पष्ट है और ये गांव सड़क मार्ग से जुड़े हुए हैं। रेडियो केंद्र के पश्चिम दिशा की ओर स्थित गांव जीरापुरा और कागदीपुरा के साथ अन्य भी कई छोटे-छोटे गांव स्थित हैं। जहां सामुदायिक रेडियो का प्रसारण पूर्णतः स्पष्ट तो नहीं लेकिन बेहतर है। दक्षिण दिशा की ओर पनाला और ज्ञानपुरा स्थित हैं। लेकिन दक्षिण के ओर स्थापित गांवों में बहुत ही नीचे घाटियों की तलहटी में बसे हुए हैं। जिसके कारण रेडियो प्रसारण रूक-रूक कर आता है। प्रसारण बेहतर नहीं है। सुबह कुछ समय और शाम को 7 बजे के बाद ही प्रसारण बेहतर होता है। इसके अलावा पूर्व दिशा में बसे गांव उमरपुरा, भीरपुरा, घाटीपुरा और भीलूकूड़ा हैं। ये सभी गांव पहाड़ों पर काफी ऊँचाईं पर बसे हुए हैं। रेडियो की क्षमता के अनुरुप यहां पर प्रसारण सभी गावों के मुकाबले बहुत ही निचले स्तर का है। प्रसारण कभी-कभी रूक-रूककर आता है। साथ ही बहुत से ऐसे भी गांव भी हैं, जो अभी भी सड़क मार्ग से जुड़े नहीं हैं। इस प्रकार नालछा सामुदायिक रेडियो केंद्र से 10 किलोमीटर की रेंज में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की पहुंच करीब 10 गांवों में स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती है। सर्वे के लिए वे ही गांव चुने गए हैं, जहां पर स्पष्ट प्रसारण के साथ वहां पहुंचने के लिए सड़क मार्ग उपलब्ध हों। अतः इस आधार पर उपरोक्त गावों का चयन किया गया है। ये गांव रेडियो केंद्र से पचिम, उत्तर और दक्षिण दिशा में स्थित है। इन गावों की कुल जनसंख्या करीब 3000 से 3200 है।

भील समुदाय के रोजगार साधन और स्थितिः

भील समुदाय के लोग लंबे समय से सघन वन क्षेत्र और पहाड़ी इलाकों में ही रहते आ रहे हैं। इनका मुख्य रोजगार खेती और जंगलों में पाई जाने वाली औषधियों और अन्य सामग्रियों पर निर्भर है। खेती के मामले में ये काफी बेहतर जानकारी रखते हैं। आधुनिक संसाधन नहीं होने के बावजूद भी ये अपने जीविका के

लिहाज से बेहतर उत्पादन कर लेते हैं। साथ ही जंगलों में होने वाले मौसमी फल आदि को भी बेंचते हैं। कुछ जनजाति समूह पशुपालन भी करते हैं, तो कुछ सब्जियां उगाते हैं। अब सामुदायिक रेडियो आने के बाद से सरकार के कार्यक्रमों के लिए लोगों को बुलाया जाता है। समय-समय पर दक्षता कार्यक्रम चला कर इनके कार्यकुशलता को तराशा जाता है। ताकि ये बेहतर कार्य कर सकें और जीविका का निर्वहन कर सकें।

सूचना और संचार माध्यमों से दूर भील समुदाय

नालछा को छोड़कर इससे जुड़े गांवों में संचार की स्थिति बहुत ही खराब है। यहां मोबाइल तो है, लेकिन उसका इस्तेमाल सिर्फ रेडियो सुनने के लिए होता हैं। क्योंकि मोबाइल टावर सही प्रकार से काम नहीं करते हैं। इसके अलावा बिजली की व्यवस्था पूरी तरह से बेकार है। इसके आने जाने का कोई समय नहीं हैं। नालछा और उसके आस-पास के किसी गांव में टेलीविजन तक नहीं हैं और ना ही कोई अखबार लेता है। आसपास के 10-12 किमी के इलाके में सिर्फ सामुदायिक रेडियो केंद्र ही एकमात्र मनोरंजन का साधन है। जिसपर 10 घंटे स्थानीय बोली में अलग-अलग स्वभाव के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। जिसे गांव वाले पूरी तन्मयता से सुनते हैं। सूचना क्रांति के युग में यहां संचार और सूचना का दूर-दूर तक कोइ भी सरोकार नहीं। सामुदायिक रेडियो केंद्र खुलने के तीन साल बाद भी यहां के गावों में रेडियो सेट वितरण नहीं हुआ है।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में मिश्रित निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है, जिसमें अनुसंधान आवश्यकता के अनुरूप उद्देश्यपूर्ण निदर्शन, दैव निदर्शन और सुविधाजनक निदर्शन पद्वति का सामंजस्यपूर्ण प्रयोग किया गया है। उद्देश्यपूर्ण निर्दशन पद्वति के द्वारा नालछा सामुदायिक रेडियो केंद्र के चारों तरफ ऐसे गांव जहां पर रेडियो की पहुंच और वे गांव सही तरीके से सड़क मार्ग से जुड़े हों। इसके अंतर्गत सामुदायिक रेडियो केंद्र से चारों ओर प्रसारण रेंज के हिसाब से नजदीक, मध्यम और दूरी पर स्थित गावों का चयन किया गया। चयन के दौरान आने वाले गावों में उन्हीं गावों को शोध अध्ययन का हिस्सा बनाया गया, जहां सामुदायिक रेडियो स्पष्ट रूप से सुनाई देता हो। साथ ही वे गांव सड़क मार्ग से जुड़ा हो। इस पैमाने पर से 7 गावों का चयन किया गया। जहां सामुदायिक रेडियो की आवाज स्पष्ट थी और वे सड़क मार्ग से जुड़े थे। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के प्रयोग के पश्चात चुने गए 7 गावों में से कुल 200 उत्तरदाताओं का चयन करना था। जो शोधकार्य में आसानी से अपनी उपलब्धता दिखा सकें और प्रश्नों के जवाब दे सकें। इसके लिए निर्वाचन कार्यालय से चयनित सभी गावों की निर्वाचन सूची प्राप्त की गई। चूंकि हमारे उत्तरदाता 18 साल से उपर वाले थे, इसलिए वोटर लिस्ट कारगर साबित हुई। लिस्ट देखने से समझ आया कि नालछा के 7 गावों में कुल 36 वार्ड हैं। 36 वार्डों में से कुल 200 उत्तरदाताओं का चयन किया जाना है। इस प्रकार गणितिय गणना के हिसाब से करीब 5.55 व्यक्ति प्रति वार्ड चयन करना था। ये अंक चूंकि दशमलव में है अतप्रतिशत इसे पूर्ण अंक अर्थाक 6 मान लिया गया। इस प्रकार हर वार्ड से 6 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। इस प्रकार 36 वार्ड़ों के उत्तरदाताओं की संख्या 200 की जगह 216 हो गई। जो शोधकार्य का पुख्ता बनाने के लिए महत्वपूर्ण साबित हुए। हर वार्ड से छः उत्तरदाताओं को चुनना भी चुनौतिपूर्ण था। इसको लेकर एक सवाल जेहन में आया कि 6 उत्तरदाता कौन-कौन से होंगे? क्या किसी विशेष क्षेत्र से होंगे आदि सवाल। इसके लिए दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया और यह तय हुआ कि पूरे वार्ड की जनसंख्या में से दैव निदर्शन विधि से कोई भी छः उत्तरदाताओं का चयन कर सकते हो। जो शोध प्रश्नों के उत्तर दे सके, अध्ययन के बीच आसानी से शामिल हो सके, बोली और संवाद को दोनों लोग आसानी से समझ सकें। ऐसे जो भी पहले उत्तरदाता सामने पड़े उन्हें अनुसूचि भरवाने के लिए शामिल किया गया। जो उपरोक्त खूबियां भी लिए हुए हों।

शोध अध्ययन के लिए संकलित तथ्यों के आधार पर परिणामों की व्याख्याः

सामुदायिक रेडियो के बारे में सबसे पहले जानकारी कहां से पता चली?

अखबार	09 प्रतिशत
रेडियो	39 प्रतिशत
टेलीविजन	00 प्रतिशत
आपसी चर्चा	52 प्रतिशत

सारणी के अवलोकन से यह बात स्पष्ट होती है कि दर्शाया है कि करीब 52 प्रतिशत लोगों को चर्चा से इसकी जानकारी मिली। तो 39 प्रतिशत लोग जिनके पास रेडियो भी था, वे रेडियो पर ही प्रसारण और प्रचार सुन सुनकर इसके बारे में जानने लगे।

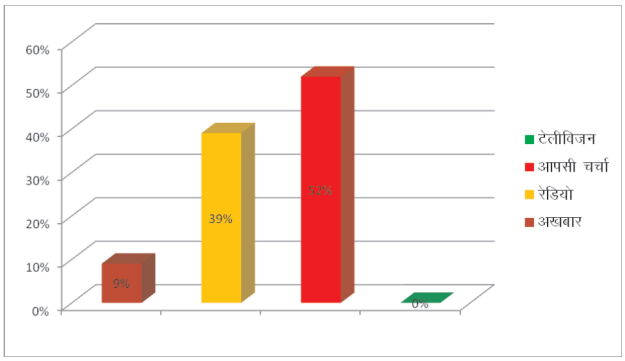

इसके अलावा 9 प्रतिशत लोगों को अखबार से भी जानकारी मिली।

वन्या सामुदायिक रेडियो सुनने का समय

सुबह	12 प्रतिशत
दोपहर	34 प्रतिशत
शाम	48 प्रतिशत
रात	06 प्रतिशत

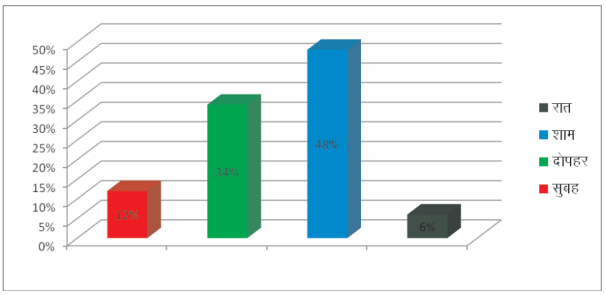

उपरोक्त सारणी और ग्राफ से स्पष्ट है कि वन्या सामुदायिक रेडियो केंद्र नालछा के श्रोता सबसे अधिक करीब 12 प्रतिशत सुबह के कार्यक्रमों को सुनना ज्यादा पसंद करते हैं। क्योंकि भील समुदाय सुबह ही मजदूरी, खेती या फिर अपने काम पर निकल जाते हैं। वे कार्यस्थल पर ही रेडियो सुनते हैं। वहीं 34 प्रतिशत लोग दोपहर में रेडियो सुनना पसंद करते हैं। इनमे सबसे ज्यादा संख्या महिलाओं के साथ युवाओं की है। इसके कार्यक्रमों की पसंदगी भी अलग है। वहीं 48 प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जो शाम को रेडियो सुनते हैं। क्योंकि घर की महिलाएं शाम के वक्त अपने घरेलू कामों में व्यस्त हो जाती हैं। जो समुदाय के लोग शाम कसे काम से लौटते हैं, वो भी चौपाल आदि पर रेडियो सुनना पसंद करते हैं। वहीं रात में मात्र 6 प्रतिशत श्रोता ही रेडियो सुनते हैं। इसमें भी युवा सबसे ज्यादा हैं।

वन्या सामुदायिक रेडियो सुनने की समय सीमा

1–2 घंटे	29 प्रतिशत
2–4 घंटे	43 प्रतिशत
4–6 घंटे	20 प्रतिशत
5 घंटे से अधिक	08 प्रतिशत

स्पष्ट है कि सबसे ज्यादा करीब दो से चार घंटे के बीच सामुदायिक रेडियो सबसे अधिक सुनते हैं। करीब 43 प्रतिशत।

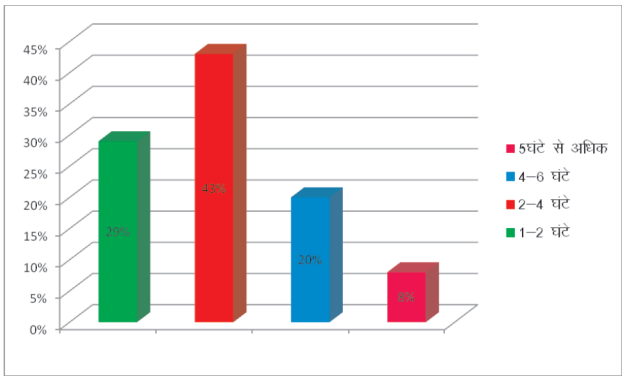

क्योंकि ये वे लोग हैं जो सुबह अपने साथ रेडियो सेट ले जाते हैं। इस दौरान अनके पास सुबह का समय भी होता हैं। दूसरा इस दौरान कार्यक्रम अलग-अलग स्वभाव के प्रसारित होते हैं। दूसरे स्तर पर एक से दो घंटे सुनने वाले 29 प्रतिशत श्रोता हैं। 4-6 घंटे वाले 20 प्रतिशत श्रोता हैं। क्योंकि 10 घंटे प्रसारण में से 6 घंटे के करीब सुनना ये सभी के बस की बात नहीं है। इनमें वे युवा वर्ग शामिल हैं, जो सुबह परिवार के साथ काम पर भी जाता है और शाम को साथियों के साथ समूह में अपना समय व्यतीत करता है। लेकिन इसके अलावा करीब 8 प्रतिशत संख्या ऐसी भी है जो 5 घंटे से भी अधिक रेडियो को सुनने का शौक रखते हैं।

सामुदायिक रेडियो के किन कार्यक्रमों को आप अधिक पसंद करते हैं?

सामुदायिक रेडियो केंद्र की ओर से 10 घंटे के प्रसारण के दौरान अलग-अलग तरह के कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। उपरोक्त ग्राफ इन्हीं पसंदगी और ना पसंदगी को बता रहा है। ग्राफ के अनुसार कार्यक्रमों को सर्वाधिक पसंद करने वालों की प्रतिशत्ता 55 है। इसमें भी 16 प्रतिशत उन्हीं की बोली में आने वाले कार्यक्रम और 17 प्रतिशत स्वास्थ्य संबंधी और 17 प्रतिशत खेती-किसानी कार्यक्रमों को सर्वाधिक पसंद करते हैं। वहीं कार्यक्रमों को थोड़ा

कार्यक्रम	सर्वाधिक पसंद	थोडा–बहुत पसंद	बिल्कुल पसंद नहीं
चिंतन एवं भजन	1 प्रतिशत	6 प्रतिशत	2 प्रतिशत
स्थानीय बोली, संगीत	16 प्रतिशत	5 प्रतिशत	3 प्रतिशत
स्वास्थ्य संबंधी, बात पते की	17 प्रतिशत	3 प्रतिशत	1 प्रतिशत
खेती–किसानी	17 प्रतिशत	3 प्रतिशत	2 प्रतिशत
बढते कदम, योजनाए	3 प्रतिशत	11 प्रतिशत	2 प्रतिशत
आज खास	1 प्रतिशत	2 प्रतिशत	5 प्रतिशत
कुल प्रतिशत 100	55 प्रतिशत	30 प्रतिशत	15 प्रतिशत

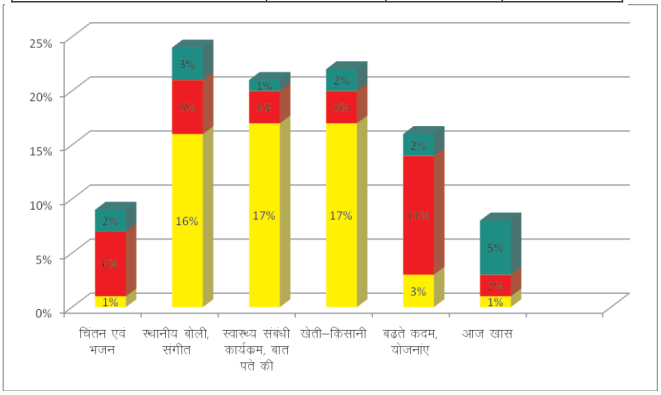

बहुत पसंद करने वालों की प्रतिशतता 30 है। इसमें 11 प्रतिशत बढ़ते कदम कार्यक्रम 06 प्रतिशत चिंतन एवं भजन पसंद करते हैं। इसके अलावा 11 प्रतिशत ऐसे उत्तरदाता हैं, जिनको कार्यक्रमों से कोई खास फर्क नहीं पड़ता है। उनके लिए रेडियो एक संसाधन की तरह है। इसका प्रयोग वे मनोरंजन के लिए करते हैं। इसमें से 05 प्रतिशत लोग आज खास कार्यक्रम का बिल्कुल पसंद नहीं करते हैं।

कर्मचारी-अधिकारियों का श्रोताओं से संवाद और प्रतिक्रिया

नियमित	05 प्रतिशत
कभी–कभार	19 प्रतिशत
कभी नहीं	76 प्रतिशत

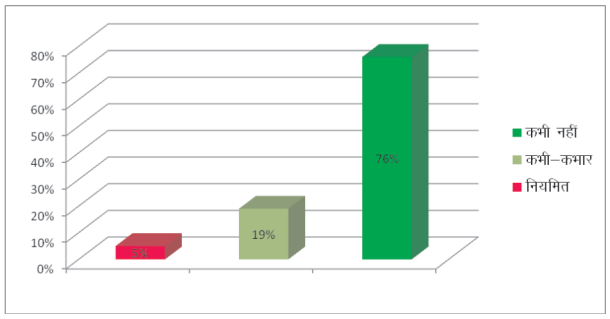

सारणी से स्पष्ट है कि रेडियो कार्यक्रमों को लेकर नियमित कोई भी फीडबैक नहीं लिया जाता है। इसी प्रकार 76 प्रतिशत श्रोताओं का कहना है कि कभी-कभार ही कोई अधिकारी कर्मचारी इसके बारे में जानने कुछ पूछने आते हैं। लेकिन पिछले एक साल से यहां कोई भी अधिकारी- कर्मचारी इस बारे में बात करने नहीं आए। इसी कारण कार्यक्रमों के नवीनीकरण के बारे में भी नहीं सोचा जा रहा है। चूंकि इसमें काम करने वाले लोग हमारे ही बीच के हैं, तो उनसे तो रोज मुलाकात होती है। इसके अलावा 19 प्रतिशत लोगों का मानना है कि रेडियो केंद्र स्थापित होने के बाद से आज तक कोई भी अधिकारी कर्मचारी यहां नहीं आया और ना ही इसके कार्यक्रमों को लेकर किसी प्रकार की राय जानने की कोशिश की गई। यह वे लोग हैं जो सघन वन क्षेत्र के आस पास और घाटियों के पास रहते हैं। यहां अभी तक कोई भी अधिकारी नहीं गया। साथ ही प्रसारण भी स्पष्ट सुनाई नहीं देता है। बाकी 5 प्रतिशत को नियमित कुछ सीखने को मिल रहा है।

सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों से श्रोताओं के जीवन में परिवर्तन

बदलाव की प्रकृति	सबसे अधिक बदलाव	थोडा बहुत बदलाव	बिल्कुल नहीं
रहन–सहन	9 प्रतिशत	4 प्रतिशत	2 प्रतिशत
स्वास्थ्य	13 प्रतिशत	3 प्रतिशत	2 प्रतिशत
खाने में पहनावे में	4 प्रतिशत	8 प्रतिशत	1 प्रतिशत
बोल–चाल	5 प्रतिशत	3 प्रतिशत	2 प्रतिशत
शिक्षा	16 प्रतिशत	5 प्रतिशत	4 प्रतिशत
आर्थिक	4 प्रतिशत	13 प्रतिशत	2 प्रतिशत
कुल प्रतिशतता 100	51प्रतिशत	36प्रतिशत	13प्रतिशत

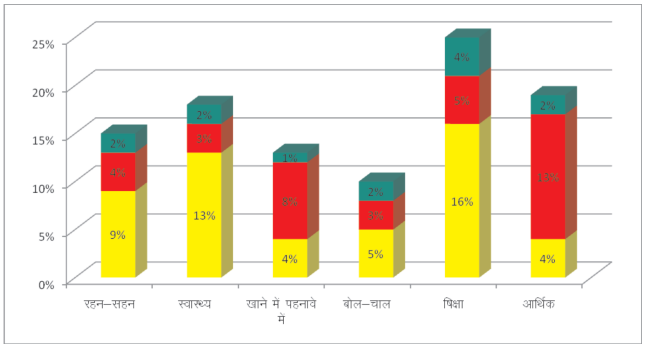

- अलावा मनोरंजन का दूसरा कोई साधन नहीं है। इसे समुदा लोग सुबह मजदूरी के वक्त और शाम को घरों और चौपालों पर एकत्रित होकर सामुदायिक रेडियो सुनते हैं।
- चूंकि नालछा में मनोरंजन का इकलौता साधन

सामुदायिक रेडियो है। अतप्रतिशत इसके बारे में जानकारी भी इससे ही मिलेगी। लेकिन लोगों पास प्रर्याप्त संख्या में रेडियो ना होने की स्थिति में इन्हें इसके बारे में संपूर्ण जानकारी नहीं मिल पाती है। लेकिन जनजातीय समुदायों में कुछ लोग जागरूकता के दम पर सामुदायिक रेडियो की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

- इसका प्रसारण सातों दिन होता है। जिसे समुदाय के लोग दिलचस्पी से सुनते हैं। चूंकि भील जनजाति रेडियो को अपने साथ कार्यस्थल पर भी ले जाते हैं, वहां काम करते हुए सुनते हैं और मनोरंजन भी करते हैं। जनजातीय समूहों के लोग हर दिन औसतन 3 से 4 घंटे सामुदायिक रेडियो का सुनते हैं। जिसमें मनोरंजन के साथ सरकारी योजनाओं की भी जानकारी होती है। सामुदायिक रेडियो इनके विकास का मार्ग है।
- नालछा में रहने वाले भील जनजाति के लोग सबसे अधिक स्थानीय बोली के कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते हैं।
- इसके अलावा उन्हें खेती-मजदूरी और सरकारी योजनाओं में स्वास्थ्य और शिक्षा के बारे में जानना सबसे अधिक पसंद हैं।
- नालछा के जनजाति समूहों के अनुसार सामुदायिक रेडियों के आने के बाद से रहन-सहन, जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य और बोलचाल में सुधार आया है।
- इसी के साथ उनका कहना है कि हमे इस बात की बेहद खुशी है कि सामुदाकि रेडियो आने से जहां एक तरफ हमारे जीवन-स्तर में सुधार आया है वहीं दूसरी तरफ हमारी सभ्यता और संस्कृतियों का संरक्षण भी हो रहा हैं। जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक विकल्प के रूप में सामने आएगा।

संदर्भ सूचीः

- श्रीवास्तव, आरएन (1994) जनजातीय विकास के चार दशक, ज्ञानदीप प्रकाशन, इलाहाबाद
- सोलंकी, मांगीलाल (1993) भील भगूरिया, मप्र आदिवासी लोक कला परिषद, भोपाल
- शुक्ल, माधव (1997) बंदेली संस्कृति में जनश्रुतियां एवं मान्यताएं, चौमासा, मार्च, जुलाई, मध्यप्रदेश
- तिवारी, शिवकुमार (1986) मध्यप्रदेश के आदिवासी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
- तिवारी, शिवकुमार (1992) भारत की जनजातियां, नार्दर्न बुक सेंटर, नई दिल्ली
- सीबी ऑनलाइन संस्कृति, (2007) अप्रतिबद्धता, समुदाय और सामुदायिक रेडियो क्षेत्र, 3 जनवरी 2007
- माइकल, (1990) अ हिस्ट्री ऑफ बर्लियन कम्युनिटी रेडियो, सितम्बर 1990
- क्रेक डान, 2005, कम्युनिटी रेडियो, द नेशन, जून
- जेसी वॉकर, 2001 रेवेल्स ऑफ द एयरप्रतिशत एन ऑल्टर्नेटिव हिस्ट्री ऑफ रेडियो, जिर्राड ब्रुस अ पैशन फॉर रेडियोः रेडियो वेव्स एंड कम्युनिटी 2002, नई दिल्ली
- यूनेस्को, हाऊ टू डे अ कम्युनिटी रेडियो प्रतिशत अ प्राइमर सेठ आतितेश्वर, भारत सामुदायिक रेडियो आंदोलन, 2003, नई दिल्ली
- ग्रामवाणी, सामुदायिक रेडियोः एक सीआर स्टेशन की स्थापना, 2007, वॉयस ऑफ रेडियो, बिहार